

भारतीय संस्कार और संस्कृति को उजागर करती कला

प्राप्ति: 30.08.2026

स्वीकृत: 14.09.2026

67

डॉ० वन्दना शर्मा

सहायक प्राध्यापक, चित्रकला विभाग

दिगंबर जैन कॉलेज बड़ौत बागपत

ईमेल: vandanabrtsharma06@gmail.com

सारांश

भारतीय सभ्यता और संस्कृति अत्यंत समृद्ध, शांतिप्रिय, मानवतावादी एवं प्रेरणादायक है। प्राचीन काल से लेकर आज तक भारतीय संस्कृति ने जीवन जीने की व्यवस्थित और आदर्श पद्धति का परिचय कराया है। आधुनिकरण के बाद भी भारतीय समाज अपने संस्कारों, परंपराओं और संस्कृति से पारंपरिक रूप से जुड़ा हुआ है। भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता इसकी विविधता में एकता है। विभिन्न धर्मों, जातियों और भाषाओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने की भावना इसमें दिखाई देती है। भारतीय कला और संस्कृति हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझने तथा व्यावहारिक एवं आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

मुख्य शब्द

संस्कार, भारतीय संस्कृति, प्रागैतिहासिक, कला

भारत वर्ष में संस्कृति, संस्कार शब्द आप और हमें अपने दैनिक दिनचर्या में पारिवारिक व सामाजिक स्तर पर कितनी बार आवृत्ति होती है। उदाहरणार्थ जैसे बड़े संस्कारी बच्चे हैं, आपके बच्चों में तो संस्कार ही नहीं है और तो और टीवी पर “भाभी जी घर पर हैं क्या? शीर्षक नाटक में है मास्टरजी का तकिया कलाम है “तुम लोगों के अन्दर संस्कार नाम की चीज है के नहीं, इन्हीं संस्कार शब्दों से बनी है हमारी भारतीय संस्कृति। संस्कार शब्द में अथहा गहराई है, संस्कार शब्द के अर्थ को एक ही शब्द में नहीं समझ सकते हैं। हमारी भारतीय संस्कृति में संस्कार है ‘शुद्धिकरण’। योग्यता के लिये शरीर, मस्तिष्क, मन आत्मा का पवित्र करना और मानव का मर्यादित होना किसी भी अनैतिक मर्यादा का उल्लंघन न करना। व्यक्तिगत स्तर के साथ-साथ सामूहिक स्तर पर भी शिष्टाचार का पालन करना नैतिकता का पालन करना गुण ग्राही व्यक्तित्व ही संस्कार है संस्कार

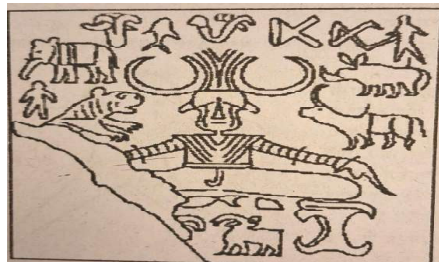
**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of Shodhmanthan.*

प्राचीन से आधुनिक तक एक व्यवस्थित प्रणाली है जो कहीं हमें हमारे शास्त्रों से मिलती है कहीं पीढ़ी दर पीढ़ी विरासत में मिलती है इसी व्यवस्थित प्रणाली को ही कला कहते हैं। कला वो कलात्मक अभिव्यक्ति है जो एक व्यवस्था को जन्म देती है और सृष्टि में व्यवस्था ही तो संस्कार और संस्कृति की जन्मदाता है। नियमों में बंधी एक व्यवस्था ही तो संस्कार है, और व्यवस्था ही कला है।

हमारे धर्म ग्रन्थों में कला की परिभाषा व्यवस्था सौंदर्य कुशलता, निपुणता और सर्जनात्मकता किसी शब्द से हम अनभिज्ञ नहीं रह सकते। संस्कृति शब्द 'संस्कार' से ही लिया गया है और संस्कार अच्छे गुण और आचरण ही है। संस्कार नैतिकता है अनैतिक के लिए संस्कार में कहीं स्थान नहीं संस्कार शब्द का मूल अर्थ ही गुण है। भारतीय संस्कृति में मनुष्य उत्पत्ति से भरण अवस्था तक शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास के लिए 16 संस्कार हैं। गर्भाधान संस्कार, पुंसवन संस्कार, सीमन्तोन्नयन संस्कार, जातकर्म संस्कार, नामकरण संस्कार, निष्क्रमण संस्कार, अन्नप्रशासन संस्कार, विवाह संस्कार, अंत्येष्टि संस्कार आदि जो हमें अनुशासित और संस्कारी बनाते हैं। यही संस्कार भारतीय सांस्कृतिक विरासत है। कला भारत ही नहीं विश्व प्रचलित संस्कृति को उजागर करती है।

कला अपने सांस्कृतिक सरोकारों के साथ आगे बढ़ती है इसकी अभिव्यक्ति कला के विविध रूपों (संगीत, नृत्य, नाटक, चित्रकला, स्थापत्य कला, सिनेमा, फोटोग्राफी, साहित्य आदि में जीवंत होती है। संस्कार जन समुदाय का व्यक्तिगत शब्द है जो भारतीयों में जन्म जात है, और संस्कृति भी प्राचीन काल से आधुनिक तक जन्मजात है। कला इन्हें व्यक्तिगत, और सामुदायिक स्तर पर उजागर कर भारत के गर्भग्रह में छिपी प्राचीनतम संस्कार और संस्कृति को हमारी भावनाओं से परिचय कराती है। क्योंकि आदिकाल से आधुनिक काल तक समाजिक परिस्थिति के अनुसार ही कला रही है। कला प्राचीनतम संस्कार और संस्कृति को उजागर करती है। प्रागैतिहासिक समय में मानव उत्पत्ति एक इकाई, इकाई से परिवार, परिवार से समुह, समुह से समाज और इसी समाज के उत्थान पतन के साथ-साथ कला का भी उत्थान पतन होता रहा है। भारतीय संस्कृति जनसमूह भूतकाल में रचा गया इतिहास है जिसने हमारी संस्कृति को जीवित रखा है। कला के इस सत्य को झुठलाया नहीं जा सकता कि जो निर्माणाधीन है उसका अन्त नहीं होगा। हमारे संस्कार हमारे अच्छे गुण और आचरण ही तो जीवन का अंग है। कला व्यक्ति के व्यक्तिगत, शारीरिक गठन से लेकर मानसिक स्थिति तक को प्रकट भाव व प्रछन्न भाव को प्रकट करती है। भारतीय कला और संस्कृति दोनों मानव प्रधान हैं। इसलिये कला में अंग भंगिमा मानवाकृति द्वारा भावाभिव्यंजना जैसे मुख, नेत्र, हाथ, पैर, देह आदि हमारे संस्कारों को व्यक्त करते हैं। जिस तरह से वस्तुतः दर्शक हृदय में होने वाले भाव चित्र के संदर्भ में अधिक महत्व पूर्ण है।' उसी प्रकार ईश्वर रूपी उर्जा ने मानव के भावों की उत्पत्ति की जो भाव उनके संस्कारों की गाथा कहते हैं युग-युग में संस्कारों और संस्कृति की पहचान कला साक्ष्य के माध्यम से ही होती रही है। हम कला के माध्यम से ही उस समय का सदृश्य दर्शन करते हैं।

जैसे पशुपति मुद्रा में पशुओं से घिरे एक योगी को अंकित किया गया है।²



योगी को मान्यताओं के अनुसार पशु अंकित के कारण पशुपति और शिव भी कहा गया है। सिर पर सींगों की तरह का मुकुट बैठने की मुद्रा से उर्जा के स्रोत की अनुभूति होती है। इन विवरणात्मक तथ्य से हम हडप्पा संस्कृति के स्थापत्य की संस्कृति को उपयोगिता व सौन्दर्यात्मक भवन निर्माण की परिष्कृत प्रणाली तथा नगर निर्माण की वैज्ञानिक व सुविकसित संस्कृति कह सकते हैं। व्यक्ति समुह से ही समाज और समाज में ही हमारे संस्कार और संस्कृति का निर्माण होता है। समय के साथ बदलते समय में कला के माध्यम से ही हमें अपनी संस्कृति का ज्ञान होता है। कला की परिभाषा विद्यवानों ने अपने-अपने अनुसार की है लेकिन क्या कला को वास्तव में परिभाषा में बांधा जा सकता है? नहीं, क्योंकि कला तो जीवन जीने की एक पूर्ण विकसित शैली है प्रत्येक क्षेत्र में भारतीय संस्कृति की झलक को दर्शाती है मूर्ति कला हो, वास्तु निर्माण कला हो, काव्य कला हो, नृत्य कला हो आदि। वास्तव में कला न ज्ञान है, न शिल्प है न विद्या है बल्कि जिसके द्वारा हमारी आत्मा परमानन्द का अनुभव करती वह कला है। कला मानवीय भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति है। कला कल्याण की जननी है, कल्पना की सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति का नाम ही कला है। असित कुमार हल्दर ने भी कहा है कला मानव का सात्विक गुण है। एक सरल भाषा है। जो मानव जीवन के सत्यों को सौंदर्यात्मक एवं कल्याणकारी रूप में प्रस्तुत करती है। कल्याणकारी शब्द ही हमारी भारतीय संस्कार और संस्कृति है। कला संस्कार और संस्कृति तीनों में शब्दों का ही चयन समाज के पक्ष को दर्पण सा दर्शाता है। कला का अर्थ आट से लैटिन शब्द आर्स से है ग्रीक “Texven” में प्राचीन शिल्प Crafts है। शिल्प और कलाकार के लिए शिल्पी शब्द का प्रयोग हुआ है, बाद में शिल्प और कला का विभाजन हुआ और कला को दो भागों में विभाजित किया गया “उपयोगी कला एवं ललित कला” उपयोगी भौतिक जगत से सम्बन्धित हो गयी और ललित कला का सम्बन्ध मनुष्य के सांस्कृतिक विकास भावों की सौंदर्यात्मक अभिव्यक्ति लोकोन्तर जीवन से है।³ उपयोगी कलाओं का सम्बन्ध सभ्यता के क्रमिक विकास व लौकिक जीवन से है।

कला ने ही हमारी भारतीय संस्कृति और संस्कारों को उजागर किया है। क्रमिक विकास में प्रौगितिहासिक काल से ही कला ने बिना लिपि व लेखन के सीधे जीवन के रहस्य को उजागर करती है। जिस समय प्रकृति की गोद में नेत्रोन्मीलन किया उस समय से ही निर्माण के तारतम्य से अपने जीवन को सुखी तथा समृद्ध बनाने की चेष्टा की ओर इस निर्माण कार्य के फलस्वरूप उसने ऐसी कृतियों का सृजन किया जो उसके जीवन को सुखद और सुचारु बना सके।⁴ भारतीय शिला चित्रों की खोज का प्रथम श्रेय भी विदेशी विद्वान आर्चिवाल कार्लाइल तथा जार्ज काकबर्न को ही है। काकबर्न की खोज का विस्तृत वर्णन सोसाइटी के जनरल⁵ में प्रकाशित हुआ। गैंडे के शिकार दृश्य

की रेखानुकृति प्रकाशित की और पशुओं के शिकार के दृश्य भी प्रागैतिहासिक के चित्रित हैं इससे प्रागैतिहासिक की संस्कृति का पता चलता है, कि उनके चित्रों का उद्देश्य आखेट था विकसित न होते हुए भी उनकी दिनचर्या उनके आनन्द की मनोस्थितियों को कला ने ही उजागर किया। चित्र संगीत का आनन्द लेता युगल वर्णन, तन्त्र विद्या सम्बन्धित मानसिकता को भी उजागर करने में कला का ही योगदान है। सिन्धुघाटी की सभ्यता का कला के द्वारा ही ज्ञान होता है। वास्तुकला में सुव्यवस्थित नगर योजना विशाल स्नानागार, लोथल का गोदीबाड़ा विश्व का प्राचीनतम बन्दरगाह मूर्तिकला में पत्थर धातु एवं मृणमूर्तियां से वहां के संस्कार और संस्कृति का बोध होता है। मोहनजोदड़ो से प्राप्त योगी की मूर्ति से उनकी संस्कृति का पता चलता है। कि वो योगी बाबा को पुरोहित भी मानते हैं। धातु की कांस्य नर्तकी की मूर्ति का यथार्थ निरूपण अत्यन्त प्रभावशाली है। उत्कीर्ण मोहरे, पात्रों पर चित्रकला से सिन्धु सभ्यता में व्यक्तिगत संस्कार और समाजिक संस्कृति का ज्ञान होता है इसके बाद भारत की संस्कृति अविराम गति से विकसित होती गई है। साथ साथ राजवंशों के कालक्रम में उनके संस्कारों और संस्कृति का कला ने ही उजागर किया है। इनका परिचय कला के माध्यम से जोगीमारा अजन्ता, बाघ, बादमी, सिन्तलवासल, सिगीरिया, ऐलोरा, एलीफंटा, कार्ले, भाज उदयगिरि मन्दिरों आदि के कलात्मक साक्ष्य देते हैं। जो इनकी संस्कृति विकास और उन्नति की गाथा सुनाते हैं। भारतीय ही नहीं विश्व की संस्कृति को भी कला ने ही उजागर किया है। कला के माध्यम से ही हमें ज्ञान प्राप्त हुआ कि सम्पूर्ण विश्व एकता जिसे अखण्ड देशों, राज्यों, धर्म, जातियों के आधार पर विभक्त कर दिया गया। यदि हम आज आधुनिक युग में भी अपने संस्कार और संस्कृति से परिचित हैं तो कला के सहयोग से। हालांकि यहां इस शोध पत्र में ना ही तो भारतीय संस्कृति का पूर्णरूप से विश्लेषण सम्भव है ना ही कला का। इतना ही अवगत कराया जा सकता है, कि भारतीय संस्कार और संस्कृति को कला में उजागर कर समृद्ध-शाली बनाया है। उच्च आदर्श सिद्धान्तों, मान्यताओं को ग्रहण करवाया है। आधुनिक कलाकार तैयब महेता का कहना है कि यह उर्जा शान्त भी हो सकती है और उतावली भी उद्यान भी हो सकती है और बैचन कर देने वाली उथल पुथल भी।⁶ भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है? यह तो नहीं पता लेकिन कला ने भूतकाल के गर्भ में छिपी भारतीय संस्कृति के किसी एक पक्ष को उजागर नहीं किया बल्कि निस्वार्थ सभी पक्षों को उजागर किया है। हर काल में मानव की निजी कला भाषा अविष्कृत की है।⁷ भारतीय संस्कृति प्राचीनतम है और इस संस्कृति की धरोहर कला पर ही आधारित है। भारतीय संस्कृति भिन्न धर्मों वाली है। हमारी संस्कृति हिन्दु धर्म केन्द्रित होते हुए भी सभी धर्मों की संस्कृति को अपनाया है। इतनी विस्तृत संस्कृति को उजागर करने का श्रेय कला को ही जाता है।

भारत की प्राचीन संस्कृति का इतिहास अत्यन्त गौरवशाली है। इसने सभ्यता के प्रारम्भिक काल से ही विश्व में प्रेरणा मार्ग स्थान प्राप्त है तथा और संस्कृति, इन दोनों शब्दों का प्रयोग प्रायः एक समान रूप से किया जाता है।

भारतीय कला की कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो इसे अन्य देशों की कलाओं से पृथक् करती हैं। इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषता के रूप में भारतीय संस्कार और संस्कृति में सामंजस्य को रखा जा सकता है।

भारतीय संस्कृति का प्रधान तत्व धार्मिकता और आध्यात्मिकता की भावना है, और कला भी इसका अपवाद नहीं है। भारतीय कला में आध्यात्मिकता की प्रधानता दृष्टिगोचर होती है। इस प्रकार धार्मिकता और आध्यात्मिकता का सुन्दर समन्वय हमें भारतीय कला में देखने को मिलता है।

इसलिए हमारी भारतीय संस्कार और संस्कृति को उजागर करने का श्रेय कला को जाता है, जिसमें मानव कलाओं के सम्बन्धित समस्त क्रियाकलापों—सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक भावनाओं का अध्ययन सम्मिलित है।

भारतीय कला मानव के सौन्दर्य विकास को समझने का प्रमुख साधन है, जो मानव व समाज के विकास का परिचायक विश्लेषण करती है।

भारतीय संस्कृति और विकास की विवेचना पौराणिक आधार पर करती है, जिसमें प्रागैतिहासिक पुरावशेषों का अध्ययन भी उपलब्ध है। भारतीय संस्कृति में उदात्त तत्व धर्मनिष्ठता की प्रबल भावना है तथा भारतीय कला का भारतीय समाज एवं संस्कृति का दर्पण है।

भारतीय कला भारत में समृद्ध धर्म और संस्कृति का रूप है, जिसमें भारतीय जनजीवन की उत्कृष्ट गरिमा की झलक है। भारतीय कला में सर्वांगीणता दिखाई देती है। प्राचीन काल में कला को साहित्य और संगीत के समकक्ष मानते हुए मनुष्य के लिए आवश्यक माना गया है।

संदर्भ

1. रूपप्रद कला के मूलाधार —डॉ० आर०ए० अग्रवाल पृ०सं०—8,9।
2. भारतीय मूर्ति कला एक परिचय —डा० गिरीज किशोर अग्रवाल पृ०सं०—2।
3. ललित कला के आधार भूत सिद्धान्त— मीनाक्षी कासलीवाल भारती पृ०सं०—1
4. भारतीय चित्रकला का विकास— डॉ० अविनाश बहादुर पृ०सं०—8।
5. जरनल ऑफ एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, 1883 वाल्यूम 52 पार्ट 2 नं० 1 पृ०सं०— 56।
6. तैयब मेहता दिनमान, 1974
7. रंग का अवकाश स्वामी नाथन के पर अखिलेश से पियुष दर्ईया का सवांद कथों दश अक्टूबर 2010 पृ०सं०—143।